मानवता व नारीत्व के सम्मान की पुनर्स्थापना करता काव्य-संग्रह: "मुझे कविता से डर लगता है।"

(समीक्षा)

समीक्षा लेखक
सुविधा पंडित,
155/ब, शास्त्री स्कूल के पास,
तलावडी सर्कल, सरदार नगर,
अहमदाबाद, गुजरात
पिन.-382475
Email: .....

सारांश(Abstract):— निश्चित ही एक समीक्षक को किसी रचना से रु-ब -रु होने से पूर्व समस्त पूर्वाग्रहों से मुक्त हो जाना चाहिए,जिससे वह रचनाकार के भावों,उद्देश्यों, व कृति की सार्थकता को पूर्णरूपेण समझ कर ग्रहण कर सके।उपेंद्र कुमार मिश्र के प्रस्तुत काव्य-संग्रह 'मुझे कविता से डर लगता है ' को मैने पूर्ण सहृदयता के साथ पढ़ने और ग्रहण करने का प्रयास किया है।स्वतः स्फूर्त रुचि उत्पन्न होती गयी और कवि की अंतर्दृष्टि एवं पर्यवेक्षण क्षमता के सापेक्ष मेरा विश्लेषण व विवेचन भी निष्पक्ष होकर मूर्त रूप लेता चला गया।यह कृति एवं हिंदी साहित्य दोनों के प्रति जवाबदेही का कर्त्तव्यबोध एवं आनंद दोनों का सम्मिश्रण है।

keywords : प्रेम, विदेशी संस्कृति, मानवीय, राजनैतिक, काव्य-संग्रह, समीक्षा

निश्चित ही एक समीक्षक को किसी रचना से रु-ब -रु होने से पूर्व समस्त पूर्वाग्रहों से मुक्त हो जाना चाहिए,जिससे वह रचनाकार के भावों,उद्देश्यों, व कृति की सार्थकता को पूर्णरूपेण समझ कर ग्रहण कर सके।उपेंद्र कुमार मिश्र के प्रस्तुत काव्य-संग्रह 'मुझे कविता से डर लगता है ' को मैने पूर्ण सहृदयता के साथ पढ़ने और ग्रहण करने का प्रयास किया है।स्वतः स्फूर्त रुचि उत्पन्न होती गयी और कवि की अंतर्दृष्टि एवं पर्यवेक्षण क्षमता के सापेक्ष मेरा विश्लेषण व विवेचन भी निष्पक्ष होकर मूर्त रूप लेता चला गया।यह कृति एवं हिंदी साहित्य दोनों के प्रति जवाबदेही का कर्त्तव्यबोध एवं आनंद दोनों का सम्मिश्रण है।

उक्त संग्रह में रचनाकार एक संवेदनशील,भाव-प्रवण कवि के रूप में सामने आए हैं।समाज,देश,राजनीति, मानवता,किसान, नारी विमर्श जैसे तमाम विषयों के साथ उन्होंने आंतर जगत के संवेगों,भावों व संघर्षों को भी काव्य रूप प्रदान किया है।

'नर-भुजंग' में राजनीति पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं "कभी असम,कभी पंजाब, कभी कश्मीर की बारी/आज खतरे में है हर एक क्यारी।" " सम्मान' में 'शोषक द्वारा पोषक का धिक सम्मान' कह कर राजनेताओं द्वारा अपनी वाहवाही करवाने ,वोट बटोरने के लिए दिए गए सम्मानों की धज्जियाँ उड़ा दीं हैं। 'राजपथ पर गोबर' ऐसी कविता है जिसमे उन्होंने शहर में गोबर की अनुपयोगिता व गाँव मे उपयोगिता को इतनी मौलिकता व सांकेतिकता से प्रस्तुत किया है कि मालूम होता है कि वे छोटे से लगा कर बड़े मुद्दों तक कितने दृष्टि सम्पन्न हैं।

शोषित मानव के प्रति पीड़ा और मज़हबी कट्टरता के प्रति आक्रोश के स्वर- "मानवता हित जंग मेरी मेरी धड़कन के साथ रुकेगी ",उनके कवि कर्म को सार्थक कर रहे हैं। लोकतंत्र में तानाशाही, और नेताओं द्वारा जनता के साथ छल-कपट को बेनकाब करती पंक्तियाँ "सकपका गयी जनता/समझने लगी निहितार्थ उस कुटिल मुस्कान का/छटपटाने लगी छले गए विश्वास की पीडा से ।"

वर्तमान में अपसंस्कृति की पीड़ा, विदेशी संस्कृति की नकल कर प्रेम को विकृत रूप दे देने की गुमराह मानसिकता और इंटरनेट के काले साये से मासूम बचपन पर पड़ रहे दुष्प्रभावों के प्रति भी कवि का मन दुख से पूरित हो कल्पना की उड़ान भरते हुए पार्क में जा पहुंचा है- "है कोई बदनसीब झाड़ी जो साक्षी न बनती हो प्रतिदिन किसी प्रेमी युगल के प्रेमलिंगन की ?" एक साथ कई प्रश्नों को खड़ा करने का सामर्थ्य रखती उनकी कविताएं सामाजिक विद्रूपता न विसंगतियों पर सोचने को विवश करती हैं।

संग्रह में मेरी सर्वाधिक प्रिय कविता 'पहन लो परिधान 'सत्य ही पुरुष के छल में फँस कर वस्त्र विहीन होती नारी मानसिकता को जगाने,आत्म-बोध करवाने और नारीत्व की गरिमा को पुनः प्राप्त करने की चेष्टा को प्रेरित करने वाले स्वरों से ओत - प्रोत है - "पौरुष की कारा में कैद न होने दो नारीत्व" और "औरत नहीं पुरुष की दासी...विफल करो हर साज़िश को " जैसी पंक्तियाँ निःसन्देह एक पुरुष रचनाकार की कलम से निकलना अद्भुत,सुखद व प्रशंसनीय है।

प्रेम को समाज द्वारा असफल कर देने की पीड़ा को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करती कविता 'पत्र दिवंगत प्रेयसी के नाम ' में " तुमने मृत्यु का आलिंगन कर जिसे दुत्कार दिया ,मैं कसमें वादे की तिलांजलि दे उसे बर्दाश्त कर रहा हूँ" ,आत्मा को झकझोर देती है और जीवन के इस यथार्थ दर्शन पर उस प्रेयसी को अश्रु का अर्घ्य स्वतः होता चला जाता है। सामाजिक रूढ़ियों,खोखली परम्पराओं व धर्मांधता के समक्ष व्यक्तिगत खुशियों को कई बार बलि चढ़ाने पड़ता है , इस सत्य को कवि ने जिस सहजता,सरलता के साथ उद्घाटित किया है ,यह कोई सक्षम रचनाकार ही कर सकता है।

'जीवन की कविता' में अभाव,पीड़ा व वेदनाग्रस्त जीवन को रस छन्द विहीन कविता कह कर कवि ने अपनी कल्पना,सोच व संवेदना के धरातल को विस्तृत आयाम दिया है-"इनसे बचना जीवन की कविता से वंचित रहना है।" नारी के आजीवन त्याग का नदी के उत्सर्ग से साम्य स्थापित कर अपने काव्य-फलक को सहिष्णु,उदात्त व गम्भीर स्वरूप प्रदान किया है-"जीवनदायिनी बन ने के लिए देना पड़ता है उत्सर्ग।"

मानवीय मूल्यों का क्षय व संवेदनहीनता कवि को लिखने के लिए बाध्य करते हैं- "आदमी समझदार बनने के लिए कितनी निर्ममता से कुचल देता है अपनी सरलता,सहजता और निश्छलता को।"जीवन -कथा"में बार-बार बिखर कर जुड़ने की पीड़ा की अनुगूँज बहुत तीव्रता से सुनाई देती है-"कितना कठिन होता है बिखर जाने के बाद खुद को बटोरना" ।'रेलवे स्टेशन पर'आम आदमी के प्रति संवेदना व्यक्त करती कविता है -"घण्टों लाइन में लग कर इस उम्मीद से करती गई मतदान कि उसे जानवरों सी ज़िन्दगी से मिल जाएगी निजात। " शब्दों के चित्र,भावों के रंग व कल्पना की तूलिका से एक कुशल चितेरे की भाँति गज़ब की सांकेतिकता व व्यंग्य मिश्रित अंदाज़ में कविता की ताक़त व सामर्थ्यशीलता को प्रस्तुत किया है "मुझे कविता से डर लगता है " में- "लाओ कोई ऐसा हथियार जिससे हराया जा सके कविता को।" 'कलुवा' में कवि ने यद्यपि कटु व तिक्त शब्दों का प्रयोग किया है परंतु सत्य व यथार्थ की सपाटबयानी निडरता से कर पाए हैं-"आखिर केवल कविता लिखते समय ही क्यों जागती है कवि की संवेदना.."।कुछ कविताओं की पंक्तियाँ उन्हें एक नारीवादी कवि के रूप में प्रतिष्ठित करती हैं,कहूँ तो अनुपयुक्त नहीं होगा।यथा 'तुम समझती क्यो नहीं' में "आखिर क्यों नहीं करता पुरुष भी अग्नि परीक्षा देने का प्रयास,वह जानता है कि क्या होगा उसका परिणाम"।

समस्त कविताएं समाजिक, राजनैतिक व मानवीय पहलुओं पर गहराई से चिंतन व मूल्यांकन करती हुई दिखाई देती हैं।भाषा-शैली भले ही सूक्ष्म पच्चीकारी एवं अलंकारों से सज्जित न हो परन्तु कवि के अभिप्रेत की संवाहक एवं सरल,सम्प्रेषणीय है।अतुकांत व अच्छन्दस होते हुए भी इनमें जीवन के छंदों को गाया गया है।रचनाकर्म की सार्थकता समाजहित व मानव हित मे रचनाधर्मिता से ही सिद्ध होती है।इस दृष्टि से उक्त काव्य-संग्रह का साहित्य व समाज दोनों में समग्रता से सहर्ष स्वागत होगा।क्योंकि " केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए,
उसमे उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिये।" अशेष शुभकामनाओं के साथ..।

----------00--------

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. उपेंद्र कुमार मिश्र, (year of publication). "मुझे कविता से डर लगता है". संस्करण-प्रथम, प्रकाशक-अयन प्रकाशक-महरौली, नई दिल्ली

----------00--------